सर्व शिक्षा अभियान, छत्तीसगढ़ नवम्बर 2015 अंक- 6

संकुल स्रोत केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु चर्चा पत्र

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

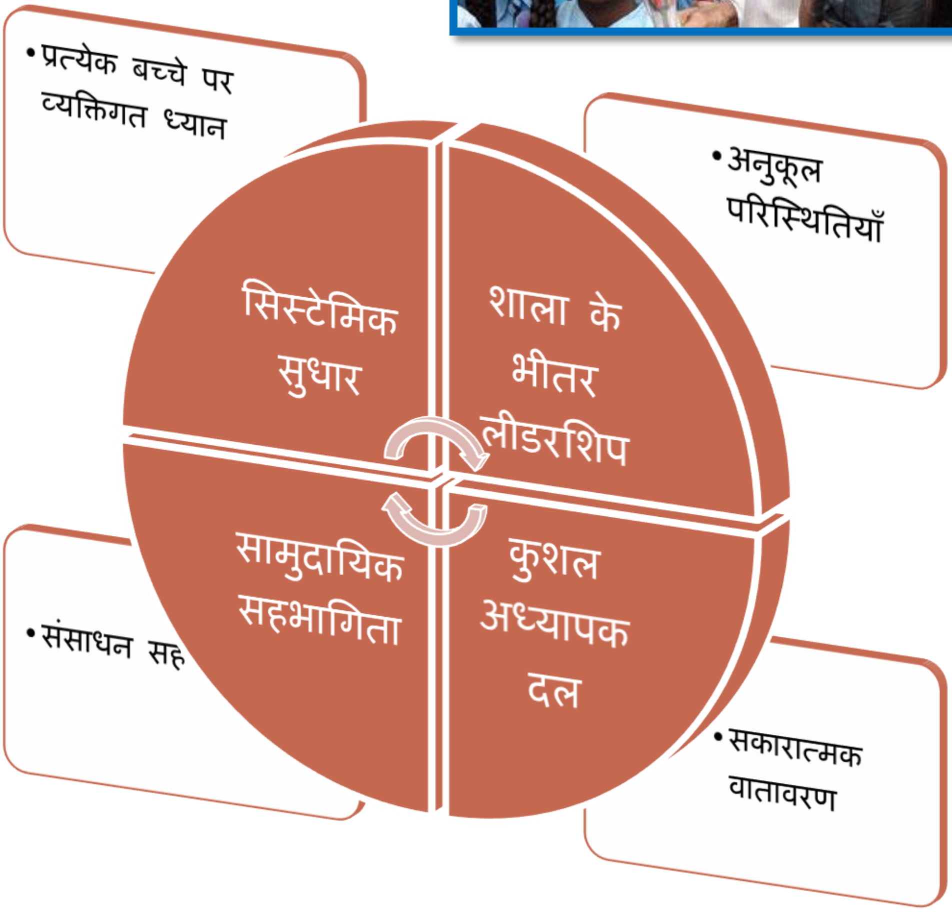

राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गांधी शिक्षा मिशन छत्तीसगढ़
संपर्क हेतु ईमेल – mis.head@gmail.com

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

एजेण्डा –1 अब तक हुई चर्चा का कियान्वयन –

माह जून से अक्टूबर 2015 तक कुल पांच चर्चा पत्र आपको अब तक उपलब्ध कराए गए हैं। माह अक्टूबर का चर्चा पत्र एवं उसके साथ उपलब्ध प्राथमिक/उच्च प्राथमिक के प्रश्न पत्र आपको सभी शालाओं को फोटोकापी कर उपलब्ध कराने होंगे। माह अक्टूबर में आपको मासिक बैठक नहीं लेनी थी अतः उस राशि का उपयोग छायाप्रति कराने में किया जा सकता है।

आपने यह महसूस किया होगा कि अब तक चर्चा पत्र में आए बिन्दुओं का पालन करने पर आपको डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अतंर्गत उपलब्ध रूब्रिक्स एवं चेक लिस्ट में ऊंची स्थिति मिली होगी। एक बार अपने सभी शिक्षकों के साथ अब तक विभिन्न मुद्दों पर किए गए कार्यों की समीक्षा कर उन्हें शाला स्तर पर नियमित रूप से किया जाना सुनिश्चित करेंगे समीक्षा हेतु कुछ क्षेत्र सुझाएं जा रहे हैं :–

- क्या आपकी सभी प्राथमिक शालाओं में रीडिंग कार्नर/मैथ कार्नर तैयार कर लिए गए हैं ?
- क्या इन कार्नर का बच्चे सीखने में नियमित उपयोग कर पा रहे हैं ?
- क्या शाला परिसर में प्रिंट रिच वातावरण हैं ?
- क्या पूर्व के अंक में बताई गई वस्तुओं के नाम परिसर में लिखे गए हैं ?
- क्या आपको मालूम हैं कि ऐसा करने से बच्चे उस वस्तु के साथ लिखे शब्द को देख देख कर पहचानने अर्थात धीरे–धीरे पढ़ने लगते हैं ?
- क्या सभी कक्षाओं के सामने उस कक्षा के विभिन्न विषयों का माहवार अधिगम सूचनांक प्रदशित हैं ?
- क्या सभी शिक्षक इन सूचकाकों के आधार पर अपनी शिक्षण योजना एवं मूल्यांकन करते हैं?
- क्या शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर कक्षा में खेल–खिलौने एवं मुखौटे बनाकर उसका उपयोग करने लगे हैं ?
- क्या उच्च प्राथमिक कक्षाओं में एक्टिव लर्निंग मेथड का नियमित उपयोग हो रहा हैं ?
- क्या सभी कक्षाओं में साफ–सुथरी कंघी, दर्पण एवं नेलकटर रखे जाने लगे हैं ?
- क्या शाला में पुस्तकालय का उपयोग बच्चे करने लग हैं ?
- क्या बच्चों की पहुँच में पुस्तकें रखी गई हैं ?
- क्या अभिव्यक्ति के कालखण्ड में बच्चों के अभिव्यक्ति कौशल में सुधार हेतु विभिन्न उपाय किए जा रहे हैं ?
- क्या शिक्षक पालकों से नियमित रूप से मिलकर फीडबैक देते हैं ?

- क्या शिक्षकों ने एक–दूसरे से सीखने एवं सहयोग के लिए अपना अलग पीएलसी का गठन कर लिया हैं ?
- क्या प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शाला में विज्ञान के विभिन्न प्रयोग नियमित प्रदर्शित कर बच्चों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि पैदा की जा रही है ?

  जिन शालाओं में उपरोक्त बाते नहीं हुई है, वहॉ तत्काल समयसीमा देते हुए इन बातों को लागू करने एवं नियमित प्रक्रिया के रूप में लाने हेतु प्रोत्साहित करें। आपके संकुल की सभी शालाओं में उपरोक्त बाते होते हुए दिखनी चाहिए।

एजेण्डा – 2 जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों का शाला भ्रमण –

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अतंर्गत प्रथम चरण में आपके संकुल के सी एवं डी ग्रेड मिली शालाओं में जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण उपस्थित होकर शाला में गुणवत्ता लाने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन दिया। हमारे राज्य के इतिहास में शायद यह पहली बार होगा कि जनप्रतिनिधिगण एवं सभी विभागों के अधिकारीगण इतनी बड़ी संख्या में शालाओं का निरीक्षण किया। इन जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के साथ संबंधित शालाओं को सतत् संपर्क में रहना है और अपनी शाला में गुणवत्ता सुधार हेतु किए जा रहे विभिन्न कार्यो से उन्हें अवगत कराना है। यही अधिकारी दुबारा एक अतंराल के बाद वापस पुनः आपकी शाला में आएंगे। आपको इन्हे अपनी शाला में पूर्व की तुलना में अपेक्षित परिवर्तन दिखाना होगा। विशेषकर अपनी शाला के प्रत्येक कक्षा के 90 प्रतिशत बच्चों में विषयवार अपेक्षित दक्षताएँ विकसित कर दिखानी ही होंगी। आगामी भ्रमण के दौरा मुख्य फोकस इसी बिन्दु पर रहेगा। ध्यान रखें कि यह कार्य एक साथ शिक्षक दैनादिंनी बना देने से, कागज में शाला विकास योजना लिख देने मात्र से या शाला विकास समिति की बैठक की कार्यवाही पंजी में पूर्व की बैठकों के मिनट्स के बीच बीच में गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के लिख देने मात्र से या वॉल मैंगजीन तैयार करने मात्र से आपकी शाला उत्कृष्ट शाला नहीं हो सकेगी। जब तक वो अकादमिक क्षेत्र में भी बच्चों के साथ काम करते हुए शाला के अधिकतम बच्चों में आयु अनुरूप अपेक्षित कौशल या दक्षताओं का विकास न कर लेवें, तब तक आपको मेहनत करनी होगी। इसलिए 100 बिन्दुओं वाली चेकलिस्ट में से अपने संकुल की सभी शालाओं का विश्लेषण कर उन सभी क्षेत्रों को सभी शालाओं में नियमित रूप से लागू करने, सभी क्षेत्रों का लाभ सीधे–सीधे बच्चों के शैक्षिक कौशलों के विकास में होना सुनिश्चित करवाएँ।

यदि आपके संकुल की शालाओं में –

- ✓ समुदाय गुणवत्ता पर चर्चा कर समीक्षा करने लगे है
- ✓ तीन साल के लिए विकास योजना है और उसमें गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है
- ✓ शिक्षक अपने अध्यापन हेतु नियमित योजना बनाते हैं और प्रत्येक बच्चे के विकास पर ध्यान देते है
- ✓ परिसर में प्रिंटरिच वातावरण, रीडिंग/मैथ कार्नर एवं वॉल मैंगजीन आदि का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है
- ✓ शिक्षक आपस में एक–दूसरे से सीखने के लिए पीएलसी का गठन कर रहे है

तो निश्चित रूप से यह मानकर चलिए कि ये सब बातें सीधे–सीधे शाला एवं बच्चों के गुणवत्ता सुधार की दिशा में अवश्य सहयोग करेंगे। उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर आपस में चर्चा कर आगे की रणनीति बनाएँ।

एजेण्डा – 3 शाला में भित्ति पत्रिका (Wall Magazine)

हमारे राज्य में बच्चों के अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु विशेष ध्यान देने सभी शालाओं में अभिव्यक्ति का एक विशेष कालखण्ड लगाए जाने के निर्देश हैं। सामान्यतः बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति के अवसर बहुत कम मिलते हैं। हमारी स्कूली शिक्षा बच्चों को परीक्षा की दृष्टि से सूचनाओं तथ्यों, विवरणों एवं अवधारणाओं को रठने तथा परीक्षा में ज्यों का त्यों उतारने को ही प्रोत्साहित करते हैं। आपकी शाला में भित्ति या दीवार पत्रिका लगाकर इस कमी को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। दीवार पत्रिका के माध्यम से बच्चे अपने विचारों को, चिंतन को, अपनी मौलिक, टूटी–फूटी, साधारण बोलचाल की भाषा में व्यक्त करते हैं, जिससे उनकी भाषा समृद्ध होती है और बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

भित्ति पत्रिका वास्तव में स्कूलों में बच्चों द्वारा इस लिखित एक पत्रिका होती है जो दीवार पर एक कैलेण्डर की भॉति लगाई जाती है। इसमें बच्चों के पढ़ने हेतु साहित्य की विभिन्न विधाओं में सामग्री तैयार कर प्रदर्शित की जाती है। इस प्रकार से सामग्री तैयार करने में लागत भी कम आती है और बच्चे इसे प्रतिमाह निकाल सकते हैं।

भित्ति पत्रिका तैयार करने हेतु निम्नलिखित प्रकिया अपनाई जा सकती है :–

- सबसे पहले बच्चों की बैठक लेकर अपनी शाला के लिए भित्ति पत्रिका का एक बढ़िया सा नाम एवं प्रदर्शित करने का स्थान चुने।
- भित्ति पत्रिका लगाने का स्थान ऐसा हो जहॉ बहुत से बच्चे एक साथ खड़े होकर इसे पढ़ सकें। इसे बच्चों की ऊँचाई एवं प्रकाश आदि की ध्यान में रखकर लगाऍ। सुरक्षा का भी ध्यान रखें ताकि सामग्री के साथ छेड़छाड़ न हो पाए।
- शाला में बच्चों के समूह में लिखने में रूचि लेने वाले अच्छे हस्तलेख वाले, अच्छे चित्रकार, सजावट करने में विशेषज्ञा बच्चों का एक समूह बनाकर संपादक मण्डल का गठन कर लेवें। यह संपादक मण्डल एक निश्चित अतंराल (कुछ माह बार) बदलने की भी व्यवस्था रखें ताकि बहुत से बच्चों को अवसर मिले।
- पत्रिका के अंक के विमोचन के लिए समुदाय से ही कुछ लोगों की आमंत्रित किया जा सकता है। उनसे भी लेख या सुझाव मांगे जा सकते हैं।
- बच्चों के संपादक मण्डल को अपनी सामग्री तैयार कर उपलब्ध कराने के निर्देश जारी करने होंगे। सामग्री में त्रुटि आदि की जांच कर संपादक मण्डल अपने साथियों को त्रुटि में सुधार हेतु भी कह सकते हैं।
- शाला के शिक्षक बच्चों को बेहतर सामग्री लिखने, विभिन्न क्षेत्रों के बारे में मार्गदर्शन ले सकते हैं।
- बच्चों को भित्ति पत्रिका के लिए छोटी–छोटी कविता, कहानी, संस्मरण, दिमागी खेल, तीज–त्यौहार, सस्कृति, पर्यटन स्थल, गांव का इतिहास एवं विषय से संबंधित विभिन्न मुद्दो पर जानकारी तैयार करने या स्वंय लिखने हेतु प्रेरित किया जाना होगा।
- संपादन मण्डल अपनी पत्रिका के लिए कुछ नियमित कालम भी सुनिश्चित कर सकता है।
- पत्रिका प्रारंभ करते समय संपादन मण्डल के पास पर्याप्त सामग्री होनी चाहिए और आगे के लिए भी अग्रिम में सामग्री रखी होनी चाहिए। भित्ति पत्रिका को बच्चों के माध्यम से सजाने का काम भी किया जा सकता है ताकि वह आकर्षक लगे।

बच्चों से सामग्री जुटाने हेतु उपाय –

- बच्चों को डायरी लिखने कहकर उनमें से अंशों को लिया जा सकता है।
- अपने क्षेत्र के बुजुर्गों, खिलाड़ियों, लोक कलाकारों, प्रसिद्ध व्यक्तियों से इटरव्यू कराएं।
- विद्यालय / गांव में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों का विवरण।

- पाठ्यपुस्तकों में आए कठिन क्षेत्रों का सरलीकरण।
- बच्चों द्वारा किए गए यात्रा वृतांत का विवरण।
- विभिन्न विषयों पर वाद–विवाद, निबंध, कहानी, कविता लेखन, चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- कोई दृश्य देखकर कविता, कहानी लिखने को देना।
- जीवन के ऐसे क्षण का विवरण जिसे सोचकर बहुत हंसी आई हो।
- हाल में देखे किसी फिल्म या पढ़ी पुस्तक पर विचार।
- जीवन में घटी किसी सत्य घटना का वर्णन।

संकुल बैठक में चर्चा कर और कुछ क्षेत्रों पर विचार करें। आप पाएंगे कि दीवार पत्रिका के नियमित प्रकाशन से आपके शाला के बच्चों में बहुत से बदलाव आएंगे। अपने संकुल के सभी शालाओं में चर्चा कर भित्ति पत्रिका हेतु योजना बनाएँ।

एजेण्डा –4 प्रश्न पूछना और जवाब देना

इस चित्र को दिखा कर या वाक्य को लिखकर पर बैठक में प्रतिभागियों से अपने विचार रखने को कहें। इस बात पर सहमति बनाने का प्रयास करें कि बच्चों को अपने शिक्षक से अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के लिए प्रश्न पूछने की पूरी–पूरी आजादी देनी चाहिए। ऐसा करने से ही हम बच्चों में सीखने, कुछ नया जानने की ललक पैदा कर सकेंगे। बच्चों के प्रश्नों से आपको भी कई बार नई जानकारियॉ मिल सकेंगी। यदि आपको किसी प्रश्न का जवाब नहीं मालूम तो आप ऐसा माहौल बनाएँ कि चलो सभी मिलकर इस प्रश्न का जवाब ढूँढे या फिर बाद में खोजकर बनाने का भरोसा दें।

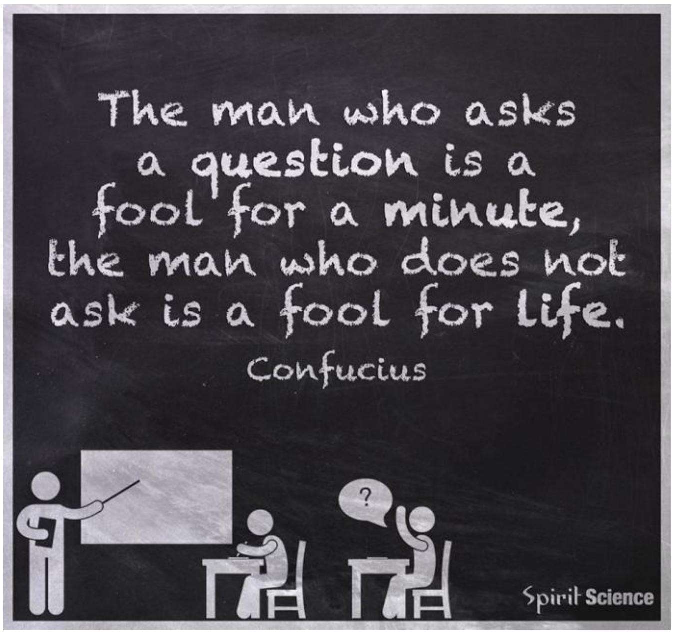

आपको पूर्व के एक अंक में यह जानकारी विश्लेषण कर बताई गई थी कि हमारे राज्य में बहुत बड़ी संस्था में बच्चे प्रश्न को हल नहीं करते, ऐसे ही छोड़ देते हैं। हमारे राज्य में बच्चों की उपलब्धि में कभी का यह बहुत बड़ा कारण है। आप अपनी कक्षाओं में ऐसा माहौल बनाएँ कि बच्चों

सभी प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें। इस बात पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। बच्चों में यह जुझारूपन लाएं कि उसे सभी प्रश्न हल करने का माद्दा है और वे प्रश्न हल कर सकते हैं।

माह अक्टूबर में मासिक बैठक न होने से उसके बदले हमने आपके लिए प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के लिए अलग–अलग प्रश्न पत्र उपलब्ध कराए गए है। आपसे अपेक्षा है कि इस प्रकार के और कुछ प्रश्न अपने संकुलों में तैयार करवाएँ और बच्चों से इन्हें हल करवाएं। स्वयं भी सभी बच्चों को ऐसे प्रश्नों को हल करने के तरीके बताएँ। कोशिश करें कि सभी बच्चे सभी प्रश्न हल कर सकें।

हमारे पास अच्छे प्रश्नों की भारी कमी है। बच्चों की विषय की गहराई परखने, सूझ–बूझ जानने हेतु क्या आप अपने–अपने संकुल में आपस में मिलकर प्रश्न बैंक तैयार कर अच्छे प्रश्नों को हमें उपलब्ध करा सकते हैं। आपके द्वारा भेजे गए प्रश्नों को संकलित कर हम उन्हें मुद्रित कर सभी के साथ शेयर कर सकते हैं।

एजेण्डा – 5 डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान में आगे क्या ?

इस अभियान में हमने सबसे पहले 20 बिन्दुओं का एक रूब्रिक्स बनाया जिसके आधार पर ग्राममसभा द्वारा शालाओं की ग्रेडिंग की गई। ग्रेडिंग जिलेवार की गई ताकि सभी जिलों में कुछ शालाओं में काम करने की गुंजाइश हो। राज्य स्तर पर एक पैमाने से ग्रेडिंग करने से कुछ जिलों में बहुत सी शालाएं और कुछ में बहुत सी शालाएं और कुछ में बहुत कम संख्या में शालाएं आती।

सी एवं डी ग्रेड की शालाओं में जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा 100 बिन्दुओं के चेकलिस्ट के आधार पर निरीक्षण किया गया। चेकलिस्ट की एक प्रति शाला में ही छोड़ दी गई।

अब सभी संकुलों से अपेक्षा है कि माह जनवरी तक सभी बिन्दुओं विशेषकर बच्चों की विषयवार उपलब्धि पर फोकस किया जाए। संकुल समन्वयक स्वयं प्रत्येक कक्षा में देखे कि बच्चों बेहतर सीख पा रहे है या नहीं ?

हम इन शालाओं के साथ काम करना प्रारंभ करने जा रहे है। हमें चेकलिस्ट का विश्लेषण करने पर और फोकस जानकारी मिल सकेगी। वर्तमान में इन क्षेत्रों में कार्य के बारे में सोचा जा रहा है :–

♦ सबसे प्रथम चरण में हम सी एवं डी ग्रेड की शालाओं के प्रधानपाठकों का मेंटरिंग पर आधारित प्रशिक्षण करने जा रहे हैं।

♦ इन शालाओं के शिक्षकों का विषय आधारित प्रशिक्षण भी दिए जाने की योजना है।

♦ आगामी संकुल चर्चा पत्रों में विषय शिक्षण पर ही फोकस किया जाएगा।

♦ चर्चा पत्रों के माध्यम से आपके आवश्यकता के क्षेत्रों पर जानकारी दी जा सकेगी।

एजेण्डा – 6 इस माह के प्रयोग :–

इस माह दीपावली की वजह से आपको एवं बच्चों को अपने आस–पास बहुत से फटाके देखने को मिलेंगे। कुछ फटाकों के कार्यविधि पर आप बच्चों के साथ चर्चा कर सकते हैं, जैसे –

❖ रॉकेट कैसे उपर जाता है ?

❖ चकरी क्यों गोल घूमती हैं ?

❖ फुलझड़ी से इतनी रौशनी कैसे आती है ?

❖ टिकली फटाका आवाज क्यों करता है ?

❖ बंदुक में रोल फटाका एक बार में एक आगे कैसे बढ़ते जाता है ?

पिछले कुछ माहों में आपने कागज के बहुत से खिलौने बनाए होंगे, बच्चों से भी बनवाए होंगे। बच्चों ने इन खिलौने का खूब मजा भी लिया होगा और खेल खेल में कुछ सीखा भी होगा। इस माह दीपावली है। क्या आप में से कोई कागज के ऐसे खिलौने बनाना जानता है जिससे बम जेसे आवाज निकले। पता करें और ऐसे खिलौने बनाना सीखे और बच्चों को भी सिखाएं।

सभी शिक्षक साथियों को

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

विज्ञान के प्रयोग

राज्य के विभिन्न प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शालाओं में बहुत सारे विज्ञान के सरल प्रयोग किए जा रहे हैं। हमारे पास इस संबंध में सैकड़ों फोटाग्राफ्स आ रहे है। **आपके संकुल में क्या चल रहा है, हमें जरूर भेजे ?**

एजेण्डा – 7 कहानी

एक दिन बालक थामस एडिसन घर आया और अपनी मॉ को स्कूल से मिला एक पेपर दिया। उसने अपनी मां से कहा – ''मेरे शिक्षक ने यह पेपर मुझे दिया है और इसे केवल अपनी मां को देने के लिए कहा है।''

जैसे ही उसने अपने बच्चे के पत्र को पढ़ा, उसकी मां की आंखों में ऑसू आ गये । एडिसन के पूछने पर मॉ ने बताया कि पत्र में लिखा है कि आपका बच्चा बहुत बुद्धिमान है। हमारी शाला उसके लिए बहुत छोटी है और हमारे शिक्षक उसको पढ़ाने के काबिल नहीं है। इसलिए कृपया अपने बच्चें को इस स्कूल से निकाल लो और स्वयं पढ़ाओं।

कई वर्षों बाद एडिसन की मां का देहांत हो जाता है और वह शताब्दी के महान अविष्कारक के रूप में प्रसिद्ध हो जाता है। एक दिन अपने घर में परिवार की पुरानी चीजों को देखते समय अचानक उसे मेज के दराज के एक कोने में एक मुड़ा हुआ पेपर दिखाई देता है। यह पेपर और कुछ नहीं बल्कि बचपन में उसके शिक्षक द्वारा उसके हाथों अपनी मां को देने के लिए लिखा गया पत्र था। उसने उसे उठाया और पढ़ा। पत्र में लिखा था – ''आपका पुत्र मानसिक रूप से बीमार है। हम उसे शाला आने की इजाजत नहीं दे सकते। कल से उसे आप अपने घर में ही देखभाल करें। उसे शाला आने की आवश्यकता नहीं हैं।'' एडिसन घंटों तक रोया और तब उसने अपनी डायरी में लिखा–''थामस अल्वा एडिसन एक ऐसी बहादुर मां का मानसिक बीमार बेटा था जो आगे चल कर शताब्दी का महान आविष्कारक बना।

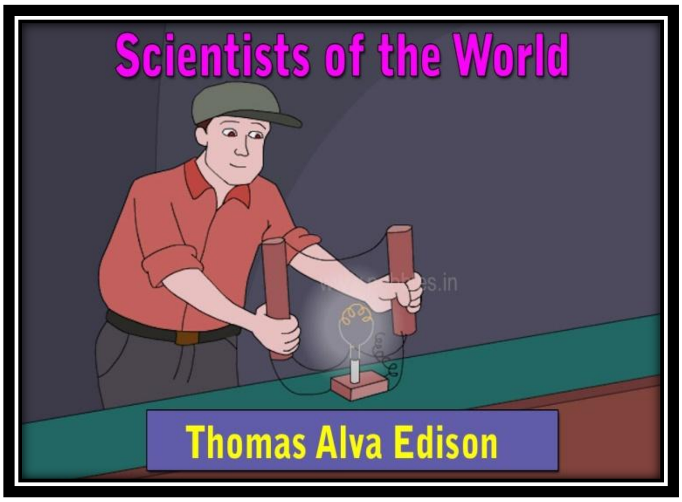

आप सभी से अनुरोध है कि आगामी अंको में कक्षा 1 से 8 तक विभिन्न विषयों में अध्यापन को रोचक एवं सरल बनाने हेतु आपके द्वारा खोजे गये नए तरीके हम चर्चा पत्र में शामिल करना चाहते हैं। यह तभी संभव होगा जब आप अपने संकुल से हमें आपके अनुभव के आधार पर सामग्री भेजेंगे।

कृपया सामग्री ई–मेल से हमें mis.head@gmail.com पर विषय में **''चर्चा पत्र''** लिखकर अवश्य भेजें।

एजेण्डा – 8 कविता से सीखना

भाजीवाला

ले लो बाबू, ले लो माँ ।
ले लो भैय्या, ले लो भाभी।
आया आया भाजीवाला।
आलू गोभी सेमी प्याज है।
लाल–लाल टमाटर है।
भिंडी लौकी प्यारी बर्बट्टी है।
हरी–हरी सभी तरकारी है।
लाल पालक चौलाई है।
सभी प्रकार की भाजी लेलो माँ।
आया आया भाजीवाला।
धनिया मेथी लहसुन है।
हरी–हरी मिर्ची भी है।
जो कभी शलगम खायेगा।
लाल–लाल मुंह हो जाएगा।
कटहल खाये किस्मत वाला।
साथ में लाया खटटा बैगन।
जो दही–मही में बनाना।
और लाया तलने वाला बैगन सब्जी।
जो दोपहर के खाने में बनाना।
ले लो बाबू, ले लो माँ ।
ले लो भैय्या, ले लो भाभी।
आया आया भाजीवाला।

इस कविता से सब्जी बेचना सिखाने के अलावा ☺☺☺☺☺और क्या-क्या सिखा सकते है, इस पर चर्चा आयोजित करें । संकुल के सभी बच्चों को ये कविता हाव-भाव के साथ आ जानी चाहिए।

एजेण्डा – 9 आपके लिए कुछ जानकारी

1. कलोत्सव – भारत सरकार द्वारा इस वर्ष से लोक कलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु एक नया कार्यक्रम प्रारंभ किया है। यह कार्यक्रम कक्षा 9–12वीं तक के बच्चों के लिए है। इसकी तहत कला के विभिन्न विधाओं जैसे नृत्य, नाटक आदि पर विभिन्न स्तरों में प्रतियोगिताएं प्रतिवर्ष आयोजित की जाएंगी। आप अभी से अपने बच्चों की प्रतिभा पहचान कर कक्षा 9वीं में इसमें शामिल होने हेतु प्रोत्साहित कर सकते है।
2. राज्य के बाहर के एक भाषा की जानकारी – एक दोस्ताना माहौल में राज्य के बाहर की किसी एक भाषा को लेकर पूरे साल भर कुछ काम किया जा सकता है। इस हेतु राज्य आपस में एक दूसरे से सहयोग ले सकते हैं। उस वर्ष उस भाषा के कुछ सामान्य बोलचाल के शब्द, वाक्य जैसे– अभिवादन एवं अन्य वाक्य को बोलना, उनकी संस्कृति, वेषभूषा, त्यौहारों से परिचय, उस भाषा की फिल्म दिखाना, फैंसीड्रेस प्रतियोगिता, भोजन आदि की जानकारी एवं गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है।
3. शहरी एवं ग्रामीण अंचल के बच्चों को एक दूसरे को समझने एवं सीखने के अवसर देना – राज्य में शहरी एवं ग्रामीण अंचल में अध्ययनरत बच्चों को एक दूसरे के बारे में जानने, समझने एवं सीखने के उद्देष्य से एक दूसरे के यहाँ शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जा सकता है। इस हेतु निजी शालाओं के साथ मिलकर कार्य किया जा सकता है।
4. अच्छे कार्यों की वीडियो क्लिपिंग्स भेजे जाने बाबत – षिक्षकों द्वारा किए जा रहे विभिन्न नवाचारी प्रयासों की छोटी छोटी वीडियो क्लिप बनाकर भेजने पर उन्हें मानव संसाधन की वेबसाईट में स्थान दिया जाने का आवष्सन दिया गया है।
5. स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय – राज्य के विभिन्न विकासखंडों से ऐसी शालाओं का चयन किए जाने की योजना हैं जो साफ–सफाई, स्वच्छता और शौचालयों एवं परिसर के रख–रखाव पर विषेष ध्यान दे रहे हैं।
6. कुछ राज्यों के हर पंचायत में पढ़े–लिखे ऐसे लोगों की सूची होती हैं जो षिक्षक की अनुपस्थिति में अथवा आवष्यकतानुसार कक्षा अध्यापन में सहयोग करते हैं। क्या हम भी अपनी शालाओं में समुदाय के सहयोग से कक्षा अध्यापन के लिए इच्छुक लोगों की सूची नहीं बना सकते ? इसमें हम युवा बेरोजगारों, सेवानिवृत्त व्यक्तियों, गांव के पढ़े–लिखे लोगों को शामिल कर उनके साथ भी एक प्रोफेषनल लर्निंग कम्यूनिटी बना सकते हैं।

एजेण्डा – 10 इस माह का शिक्षक

रायपुर जिले के आरंग विकासखंड में शासकीय प्राथमिक शाला बनचरौदा में एक शिक्षक कार्यरत हैं जिनका नाम दीपक कुमार दुबे है। अपने नाम के अनुरूप ही वे अपनी शाला में शिक्षा का उजियारा फैला रहे है। इनके पढ़ाने का तरीका बहुत अच्छा हैं और बच्चों को इनके द्वारा पढ़ाई गई बातें बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है। ये स्वयं भी सतत अध्ययनशील हैं और तीन विषयों में स्नातकोत्तर के साथ डी.एड एवं एलएलबी भी है।

आमतौर में एक बार प्रशिक्षण के समय जो सामग्री उपयोग में लिया जाता है उसे बाद में उपयोग में नहीं लाया जाता। पर दीपक कुमार दुबे जी अपने कक्षा लेते समय अलग–अलग कक्षाओं के बच्चों को अलग–अलग पढ़ाने के सहायक सामग्री का उपयोग करते है। इनके पास नये पुराने सभी प्रकार की सहायक सामग्री उपलब्ध हैं। अभी तक लिए गए विभिन्न प्रशिक्षणों में उपलब्ध कराये गये संदर्शिकाओं को भी न केवल सहेज कर रखा है बल्कि उनमें बताई गई बातों को वे नियमित रूप से अपनी कक्षा में प्रयोग करते है। गणित एवं इंग्लिश विषय में बच्चों को गतिविधि आधारित पढ़ाई नियमित रूप से कराते हैं। जिससे इनके शाला में शिक्षा का स्तर ऊंचा है और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान ग्रेंडिंग में इस शाला को बेहतर ग्रेड मिला है। जिससे यह प्रदर्शित होता है कि यह शिक्षक का पढ़ाने का तरीका उच्च कोटि का है। इनके शाला के वातावरण भी बहुत ही अच्छा है। इनके स्कूल में वाटिका बना हुआ है और जो बहुत ही सुन्दर है तथा वाटिका की देख–रेख शिक्षक, बच्चे एवं गांव के लोग करते हैं। इनके शाला के चारों ओर घेराव किया गया है उस घेराव में बहुत ही सुरक्षित रहते है यहां के बच्चे।

इनके शाला में पर्याप्त संख्या में टॉयलेट हैं। इनके सभी प्रकार की सुविधा है और साफ–सफाई हमेशा रहती है। संकुल में मासिक बैठक के दौरान यदि आपके शिक्षक इनसे बात करना चाहें तो इनका मोबाईल नंबर है – 9826956044